मनसा सेवा - 65

(Divine Visions through Mansa Sewa)

अव्यक्त बापदादा :- (13/11/1997)

➳ _ ➳ आजकल के समय और सरकमस्टांश के प्रमाण अन्तिम सेवा यही मन्सा वा मनोबल की सेवा है। इसका अभ्यास अभी से करो। चाहे वाणी द्वारा वा संबंध सम्पर्क द्वारा सेवा करते हो लेकिन अब इस मन्सा सेवा का अभ्यास अति आवश्यक है, साथ-साथ अभ्यास करते चलो। समझा क्या करना है? यह मन्सा सेवा वही रंगत दिखायेगी जो स्थापना के आदि में बाप की मन्सा द्वारा रूहानी आकर्षण ने बच्चों को आकर्षित किया। और मन्सा सेवा के फल स्वरूप अभी भी देख रहे हो कि वही आत्मायें अब भी फाउण्डेशन हैं। ड्रामा अनुसार यह बाप की मन्सा आकर्षण का सबूत है जो कितने पक्के हैं। तो अन्त में भी अभी बाप के साथ आपकी भी मन्सा आकर्षण, रूहानी आकर्षण से जो आत्मायें आयेंगी वह समय अनुसार समय कम, मेहनत कम और ब्राह्मण परिवार में वृद्धि करने के निमित बनेंगी। वही पहले वाली रंगत अन्त में भी देखेंगे। **जैसे आदि में ब्रह्मा बाप को साधारण न देख कृष्ण के रूप में अनुभव करते थे।**

➳ _ ➳ साक्षात्कार अलग चीज़ है लेकिन साक्षात स्वरूप में कृष्ण ही देखते, खाते-पीते चलते थे। ऐसा है ना? तो स्थापना में एक बाप ने किया, अन्त में आप बच्चे भी आत्माओं के आगे साक्षात देवी-देवता दिखाई देंगे। वह समझेगे ही नहीं कि यह कोई साधारण हैं। वही पूज्यपन का प्रभाव अनुभव करेंगे, तब बाप सहित आप सभी के प्रत्यक्षता का पर्दा खुलेगा। अभी अकेले बाप को नहीं करना है। बच्चों के साथ प्रत्यक्ष होना है। जैसे स्थापना में ब्रह्मा के साथ विशेष ब्राह्मण भी स्थापना के निमित बनें, ऐसे समाप्ति के समय भी बाप के साथ-साथ अनन्य बच्चे भी देव रूप में साक्षात अनुभव होंगे। इसके लिए यही जो आज सुनाया अभी से प्रालब्ध स्वरूप में स्थित रहो। **छोडो छोटी-छोटी बातों को, अब ऊंचे जाओ।** विशेष प्रालब्ध स्वरूप का साक्षात्कार स्वयं भी करो और कराओ। समझा।

➢➢ अंत में आत्माओं को कौन सा साक्षात्कार कराना है ?

➳ _ ➳ **7 साक्षात्कार जो हमें आत्माओं को कराना है**

→ **देवी-देवता का**

- हम नहीं दिखे, देवी-देवता दिखें
- जिनकी मंदिरों में पूजा होती है वो हम हैं
- वो अर्चनीय, वन्दनीय, पूजनीय हम हैं
- **अष्ट शक्तिधारी, सिंह वाहिनी, माँ का, जगत जननी का साक्षात्कार हो**
- दुर्गा, काली, वैष्णवी, शीतला, महालक्ष्मी, सरस्वती
- हनुमान, गणेश, ईष्ट देव का साक्षात्कार
- **मैं संकट मोचन हनुमान हूँ, मैं विघ्न विनाशक गणेश हूँ**
- मैं अखंड ब्रह्मचारी हूँ, ब्रह्मा सा आचरण करने वाला, ब्रह्म में स्थित होने वाला

→ **लाइट का साक्षात्कार**

- हम नहीं दिखेंगे, केवल एक अद्भुत प्रकाश, रोशनी ही रोशनी

→ **फ़रिश्ता स्वरुप का साक्षात्कार**

- **उनको लगे ये तो वही फ़रिश्ते हैं जो उनके स्वप्न में आये थे**
- चलते-फिरते, घूमते- मैं फ़रिश्ता हूँ, पुरानी दुनिया से, पुराने संस्कारों से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है
- **'मैं बाप समान फ़रिश्ता हूँ'- इस संकल्प को रोज स्मृति की धूप और स्मृति का पानी देना**

→ **बिंदु रूप का साक्षात्कार**

- **केवल चमकती हुई ज्योति, चमकती हुई बिंदी, ज्योति बिंदु का साक्षात्कार**

→ **आधारमूर्त और उद्धारमूर्त का साक्षात्कार**

- **विश्व रक्षक, सहारेदाता, सुखकर्ता, दुःखहर्ता हैं**
- ये हमारे पालनहार हैं, ये जगत के पालनहार हैं
- **हम इस जगत के आधारमूर्त और उद्धारमूर्त हैं**

→ **अल्लाह लोग का साक्षात्कार**

- **ये अल्लाह लोग हैं, ये भगवान के बच्चे हैं**
- इन्होने भगवान को पाया, हमने नहीं

→ **हममें बाप का साक्षात्कार**

- हममें वो दिखेगा
- हम और वो एक हैं
- **I and my father are one**
- हर जगह वो ही वो
- तब प्रत्यक्षता का पर्दा खुलेगा
  - द्वापर से ये सर्वव्यापी की धारणा आएगी